Title:*h Raised an issue of shortage and black marketing of fertilizers.

श्री बलराम जाखड़ : कुछ दिन पहले आपको एक कालिंग अटैंशन मोशन दिया गया था लेकिन उससे पहले कृषि मंत्री ने खाद की कमी के बारे में एक वक्तव्य दिया। प्रधान मंत्री जी सार्वजिनक तौर पर कहते रहे हैं कि फर्टिलाइजर संकट से उन्हें पूर्णतया जानकारी है। दो दिन पहले फर्टिलाइजर मंत्री की जगह कृषि मंत्री ने वक्तव्य दिया। उसमें उन्होंने कहा कि देश में बहुत खाद है। हमने प्रबन्ध कर लिया है। यह सरकार जागरूक है, वह समझती है कि हम इस बात को जानते हैं कि खाद की कमी होगी तो इससे किसानों का नुकसान होगा। क्या यह सिर्फ घरियाली आंसू है, इसके बारे में मैं क्या कहूं?

... (व्यवधान)

एक सवाल का जवाब भी आपने दिया है। आठ तारीख को एक क्वेश्चन पूछा गया, उसका है। इसमें कहा गया है कि खाद अधिक है। हमारे पास जरूरत से ज्यादा खाद मौजूद है, तो फिर कमी किस बात की है। अगर कमी नहीं है तो फिर झगड़ा किस बात का है? क्या आपको ज्ञान नहीं है या जो आंकड़े दिय गये हैं, उनके बारे में आपको पता नहीं है। यह किसका कुसूर है, मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। दूसरा, फर्टिलाइजर मिनिस्टर की बजाए कृषि मंत्री ने यहां पर वक्तव्य दिया। यह काम तो फर्टिलाइजर मिनिस्ट्री का है और मांगने वाले कृषि मंत्री हैं, मैं भी हूं और किसान भी है। हम तो मांगने वाले हैं। कृषि मंत्री भी खाद मांगता है क्योंकि उनको अपना टारगेट पूरा करने के लिए खाद चाहिए। सवाल यह है कि इस सारे मसले का क्या हो रहा है और किस तरीके से होता है। कृषि मंत्री ने कहा कि कि मैं किसान हूं और मेरे ख्याल से बरनाला जी भी कहेंगे कि मैं भी किसान हूं। उन्होंने खेती की है या नहीं, इसके बारे में मुझे पता नहीं। खेती करने वाले को पता होता है कि ठजिस तन लागे, सो ही तन जाने' कि खेती क्या होती है और किस तरीके से होती है। किस वक्त खाद मिलती है या नहीं मिलती। खाद मिलने के बाद खेती का क्या रंग होता है और क्या नतीजा निकलता है? किसान को लक्षय की प्राप्ति होती है या नहीं?

MR. SPEAKER: Dr. Jakhar, there are 45 Members who wish to speak during Zero Hour. Today, I want to accommodate all of them.
SHRI BALRAM JAKHAR : Sir, you have given me this time to explain certain things. I am very much perturbed.

मैं एक सवाल और उठाना चाहता हूं लेकिन मैं उसे आज नहीं उठाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय : आप जरा टाइम का ध्यान रखिये।

श्री बलराम जाखड़ : मैं तो बहुत कम समय लेता हूं। कल आपने देखा कि रूल्स एंड रेगुलेशन की धज्जियां उड़ा दी गईं। उसके बाद भी मैंने झगड़ा नहीं किया क्योंकि मैं जानता हूं कि झगड़ा करना अच्छा नहीं है । यह गलत बात होती है। यह हमारा अधिकार है। एक बात और बताऊं। डिफेंस की जो बात है, वह मैं आज नहीं कहूंगा लेकिन एक बात डिफेंस के साथ यह भी है कि पेट में खाने के लिए कुछ नहीं है।

न कुछ देखा नेम धर्म में,

न कुछ देखा पोथी में,

कहे कबीर सुनो भाई साधो,

जो कुछ देखा सो रोटी में।

लेकिन कल क्या होगा? अगर रोटी नहीं होगी तो कल क्या होगा। रोटी होगी तब जब किसान बोयेगा और बोयेगा तब जब उसके पास खाद होगी। यह सारा सिलसिला क्या है और समय पर नहीं होगा तब बात क्या होगी? जब खाद वक्त पर नहीं मिलेगी और जो कुछ बोया है, तो उसमें कहां से उत्पादन होगा, किस तरीके से होगा, इस सारी स्थिति को समझने के लिए पूरा अनुमान होता है। कम से कम कृषि मंत्री और फर्टिलाइजर मंत्री को अनुमान होना चाहिए। पहले तो नुकसान यही है कि हमने भी फर्टिलाइजर और एग्रीकल्चर को अलग करने की गलती की और इस सरकार ने भी यही गलती की। हमने जो गलती की, वह तो ठीक है लेकिन आप तो इस गलती को सुधार लेते।

आपको पता होना चाहिए कि फर्टिलाईजर मिनिस्ट्री की जरूरत कृषि मंत्री को है और उनको यह पता होना चाहिए कि किस तरह से कहां खाद जानी चाहिए, कितनी खाद जानी चाहिए और यह सब किस वक्त होना चाहिए। मैं फर्टिलाईजर मिनिस्टर को दिखाना चाहता हूं, मैंने सारी कटिंग्स इकट्ठी कर रखी हैं। किसान के साथ क्या हुआ, किस तरह हुआ, किसान को क्या मिला और क्या आगे मिलने वाला है। आपने एक काम और करवा दिया, नकली बीज दिए, किसान की छुट्टी हो गई, किसान मर गया, सैंकड़ों नहीं हजारों किसानों ने आत्महत्या कर ली। मैं स्वयं जाकर आया हूं, यदि आप भी जाते तो पता लगता कि किसान ने किस तरह एड़ियां रगड़-रगड़कर जान दी है। क्यों दी है?

... (व्यवधान)

हमारे वक्त में किसी किसान ने आत्महत्या नहीं की, बिल्कुल नहीं हुई।

... (व्यवधान)

श्री राजवीर सिंह (आंवला): आत्महत्या किस समय हुई?

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Rajveer Singh, please sit down.

श्री बलराम जाखड़ : आप बैठिए, मैं गिनती करवा सकता हूं, मैं मंत्री जी से बात कर रहा हूं। आपको बड़ी पुरानी आदत है।

... (व्यवधान)

सवाल यह है कि इसे किस तरह से निपटाना है और क्या करना है। इनको यह पता नहीं है कि क्या, किस समय हो रहा है। आज मजाक उड़ाते हैं। कल आपकी एक बात पर पिटाई हुई और आज दूसरी बात पर फिर होने वाली है। मैं आपके भले की बात कर रहा हूं कि वक्त से उठो, जागो, सोओ मत, किसान इस देश की रीढ़ की हड्डी है, उसे जीने दो।

मेरे पास भी आंकड़े हैं। मैं समझता हूं कि पोटाश की कमी हुई। आप फार्वर्ड प्राईसिंग करना चाहते थे, आपने कमेटी बनाई, उसकी रिपोर्ट भी आई है, आपने उस पर ध्यान नहीं दिया, कर लेते तो पहले हो जाता। पोटाश नहीं आई। केरल के लोग फलों की खेती करते हैं। उनके लिए भी आपने नहीं किया। खाद नहीं गई।

... (व्यवधान)

खाद है और दिन-दहाड़े ब्लैक हो रही है

DAP being sold on black market'
MR. SPEAKER: The Minister is also here. He can reply to you.

श्री बलराम जाखड़ : मैं कहना चाहता हूं कि यह मिली-भगत है। आप कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। मैंने कल आपसे ओमान के बारे में प्रश्न किया था। आपने कहा कि हम इन्क्वारी करवाएंगे लेकिन इसके बाद भी इन्क्वारी नहीं हुई और आज आप यह काम करने जा रहे हैं। खाद ब्लैक मार्किट में बिकती है, यह क्या सिलसिला है। मैं सारी बातें इसलिए कहना चाहता हूं क्योंकि हम मेरी आपकी नहीं, किसान की बात करना चाहते हैं। इसलिए आप इसे सोचिए और देखिए कि किस तरह से बंदोबस्त करना चाहते हैं।

स्पीकर साहब चाहते हैं कि मैं बात खत्म करूं। इसका क्या इलाज है। कल भी हमारी पिटाई हुई और आज भी होने जा रही है, इसका कोई इलाज नहीं है। फर्टिलाईजर मिनिस्टर, आप जरा इस सीरियस ईशू पर ध्यान दीजिए।

MR. SPEAKER: There are other hon. members who would like to raise their issue. Please understand. Every hon. Member is interested to raise his issue.

श्री बलराम जाखड़ : ये शुगर इम्पोर्ट कर रहे हैं और शुगर इंडस्ट्री का भट्टा बिठा रहे हैं, किसान को मारने जा रहे हैं। कल क्या होने जा रहा है, इसे भी आप सोचिए। प्रधानमंत्री जी नहीं हैं, वे कहते हैं कि मैं इस बात से अवगत हूं। खुराना जी, आप जरा अवगत करवा दीजिए कि किसान मरेगा क्योंकि उसका गन्ना नहीं बिकेगा और आपकी फैक्ट्रियां बंद हो जाएंगी।

... (व्यवधान)

एक समय था जब हमने बाहर भेजी थी और आज आप इम्पोर्ट कर रहे हैं। यह भी एक सिलसिला है। कहने को बहुत कुछ है, यदि मैं सारा पोथा पड़कर बताऊं तो आपको पता लगेगा कि क्या हो रहा है।

... (व्यवधान)

जरा सोचिए और बताइए कि खाद का घपला क्यों हुआ, खाद ब्लैक में क्यों बिकी, क्यों नहीं वक्त पर पहुंची?

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Motilal Vohra, you can associate with him.
... (Interruptions)
SHRI RAJESH PILOT : Sir, the hon. Minister is here. Let him respond. ... (Interruptions)
SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI): Sir, I would like to raise an important matter. ... (Interruptions)
MR. SPEAKER: I will call your name.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Motilal Vohra, you can also associate with him because you have given your name.

श्री मोहन सिंह : जाखड़ साहब का पेपर हम लोगों के ज्ञान-वर्धन के लिए टेबल पर रख दीजिए। (

Interruptions)

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS AND MINISTER OF FOOD AND CONSUMER AFFAIRS (SARDAR SURJIT SINGH BARNALA): Sir, I am thankful to Dr. Balram Jakhar for bringing this matter in this House. I would like to make a short statement on this.
So far as urea is concerned, this is the only fertiliser which is under price, distribution and movement control of the Government of India. No shortage of urea was reported either during Kharif, 1998 or during the current Rabi season so far. Its availability is adequate in the country. Against the assessed demand of 110.0 lakh metric tonnes, the estimated availability will be 126.0 metric tonnes. (Interruptions). About the availability... (Interruptions).

श्री बलराम जाखड़ : अभी यूरिया की क्या जरूरत है, अभी डी.ए.पी. की जरूरत है, वह बताइये।

... (व्यवधान)

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : मैंने यूरिया की बात की है, अब डी.ए.पी. की बात करता हूं। अब डी.ए.पी. की बात सुनिये।

... (व्यवधान)

श्री मोहन सिंह : यूरिया की जरूरत १५ दिन बाद है।

अध्यक्ष महोदय : पहले उनको पूरा करने दो।

... (व्यवधान)

श्री बलराम जाखड़ : पहले बोते समय डी.ए.पी. चाहिए, तब फसल होती है, लेकिन उसके बारे में तो आपने कहा नहीं।

... (व्यवधान)

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : डी.ए.पी. की बात कर रहा हूं, आप सुनिये।

श्री बलराम जाखड़ : आपके पास थी, मैं तो यह पूछ रहा हूं कि वक्त पर दी क्यों नहीं, मूवमेंट क्यों नहीं हुआ? मैं यह पूछना चाहता हूं कि ब्लैक मार्केटिंग क्यों हुई?

... (व्यवधान)

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : मैं वह भी बताऊंगा कि क्यों नहीं दी।

... (व्यवधान)

श्री रामनारायण मीणा (कोटा) : डी.ए.पी. के एक कट्टे के साथ १०-१०, १५-१५ यूरिया के कट्टे दिये जा रहे हैं, किसानों को लूटा जा रहा है, मनमाने भाव पर खाद दी जा रही है।

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह बात अच्छी नहीं है।

श्री रामनारायण मीणा : काश्तकार के खेत खाली पड़े हैं, उसके बारे में आपको क्या कहना है? किसान के खाद पर ब्लैक मार्केटिंग इतनी हावी है कि उसकी कोई सुनवाई नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री कृष्ण कुमार चौधरी (गया): डी.ए.पी. ६०० रुपये में एक कट्टा खुले बाजार में बिक रही है।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Let him complete.
... (Interruptions)

श्री रामनारायण मीणा : किसानों को जो १०-१०, १५-१५ कट्टे यूरिया के लगाये जा रहे हैं, उन ब्लैक मार्केटियर्स के खिलाफ क्या कार्रवाई की जा रही है?

MR. SPEAKER: This is not good. The hon. Minister is giving the reply. What is this?
SARDAR SURJIT SINGH BARNALA: DAP also...(Interruptions).
MR. SPEAKER: Is it the proper way? The Minister is giving the reply. You are objecting it. Let him complete. The hon. Minister is giving the reply. What is this? This is not good.
... (Interruptions)

डॉ. प्रभा ठाकुर (अजमेर): रबी की फसल खत्म होने के आसार नजर आ रहे हैं, क्योंकि किसानों को समय पर खाद बिल्कुल नहीं मिल रही है। खाद होते हुए भी किसान में भी मिलनी मुश्किल हो रही है।

MR. SPEAKER: Let the Minister complete his reply. What is this? First, you must understand the position. The Minister is giving the reply.
... (Interruptions)
SARDAR SURJIT SINGH BARNALA: As I mentioned, DAP is also a decontrolled fertiliser and like MOP, its availability is also dependent on market forces. The imports of DAP are decanalised and made on private trade account. The production of DAP (which meets nearly 70 per cent of the demand) in the country during 1998-99 has been of the order of 26.63 LMT up to November, 1998. This is higher than the production of 25.57 LMT till November, 1998 which was higher by 2 LMTs over the imports of 14.6 in the previous year during the same period. The overall availability of DAP during Kharif, 1998 had been adequate to support sales of 28 LMTs. For Rabi, 1998-99, the estimated availability of DAP is 35 LMTs which is adequate to meet the requirement of 31 LMTs projected by the States. We have a demand of 31 lakh tonnes and the availability is 35 lakh tonnes for Rabi. However, pockets of shortages have been reported from the States of Rajasthan, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Punjab and Haryana. These have occurred mainly due to the following reasons: (Interruptions)
SHRI BALRAM JAKHAR : I am sorry to interrupt you.

मेरा प्रश्न इतना है, मैं जानता हूं, आपके पास मेरे सवाल का जवाब है कि सिवा पोटाश के आपके पास सारा सरप्लस था। पोटाश को आपने इम्पोर्ट नहीं करवाया, उससे कमी हुई, लेकिन आपके पास होते हुए मूवमेंट क्यों नहीं हुआ, ब्लैक में कैसे बिका और मिक्सचर खराब क्यों हुआ, उसका जवाब दीजिए?

... (व्यवधान)

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : बोलने देंगे, तभी जवाब दूंगा।

The shortages were due to the following reasons: (Interruptions).

श्री अजीत जोगी : किसानों को डी.ए.पी. नहीं मिल रहा है

... (व्यवधान)

उसकी लूट हो रही है, उसकी बुवाई रुकी हुई है और आप यूरिया की बात कर रहे हैं, जबकि इस समय डी.ए.पी. की जरूरत है।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Jogi, you are always disturbing the House.
... (Interruptions)
SARDAR SURJIT SINGH BARNALA: The shortages were due to the following reasons:
(i) There has been bunching of imports of nearly 7.5 LMTs brought by various companies during the month of October-November, 1998. As a result, DAP could not be pre-positioned by the importers. So, there was the bunching. This is the first reason.
(ii) Nearly 5 LMTs have been brought to 2 of the ports, namely, JNPT and Vizag. This has resulted in congestion and consequent delay in movement from these ports. The problem at Vizag port was compounded by the cyclone which affected the movement of rakes for nearly 20 days.
(iii) The DAP demand peaked sharply due to increase in the area under wheat which had gone up from 3.0 million hectare in the previous year to 4.6 million hectare as on 23.11.1998. The increase was due to unseasonal rains which occurred during the month of October, 1998. Suddenly, there was a big demand. The increase was due to unseasonal rains during the month of October, 1998.
As I explained earlier, DAP is a decontrolled fertiliser and its availability is a function of demand and supply. But our effort has been to meet the demand and for that we have done... (Interruptions). Nevertheless, the Government of India has taken following measures to help the States in meeting the localised shortages.
(a) Priority has been accorded in berthing of DAP vessels both at JNPT and Vizag.
(b) Priority has been accorded for movement of DAP by rail both from plants and ports. Nearly 1.50 LMTs have already been cleared from JNPT. Similar efforts are on for clearance of 1.47 LMTs DAP from Vizag port. Already by 9th December, 1998, 1.03 LMTs has been cleared from Vizag also.
(c) 55,000 MTs of DAP has been specially contracted from Jordan. The first shipment of 25,000 MTs has reached JNPT yesterday.
So, that is being sent to the States now. There is no shortage reported so far. (Interruptions).
SHRI RAJESH PILOT : Sir, you should help us. (Interruptions).
MR. SPEAKER: I have called Shri Vijay Goel.
... (Interruptions)